आयकर विभाग

INCOME TAX DEPARTMENT

आन्ध्र प्रदेश एवं तेलंगाना क्षेत्र

ANDHRA PRADESH & TELANGANA REGION

हैदराबाद प्रभार

HYDERABAD CHARGE

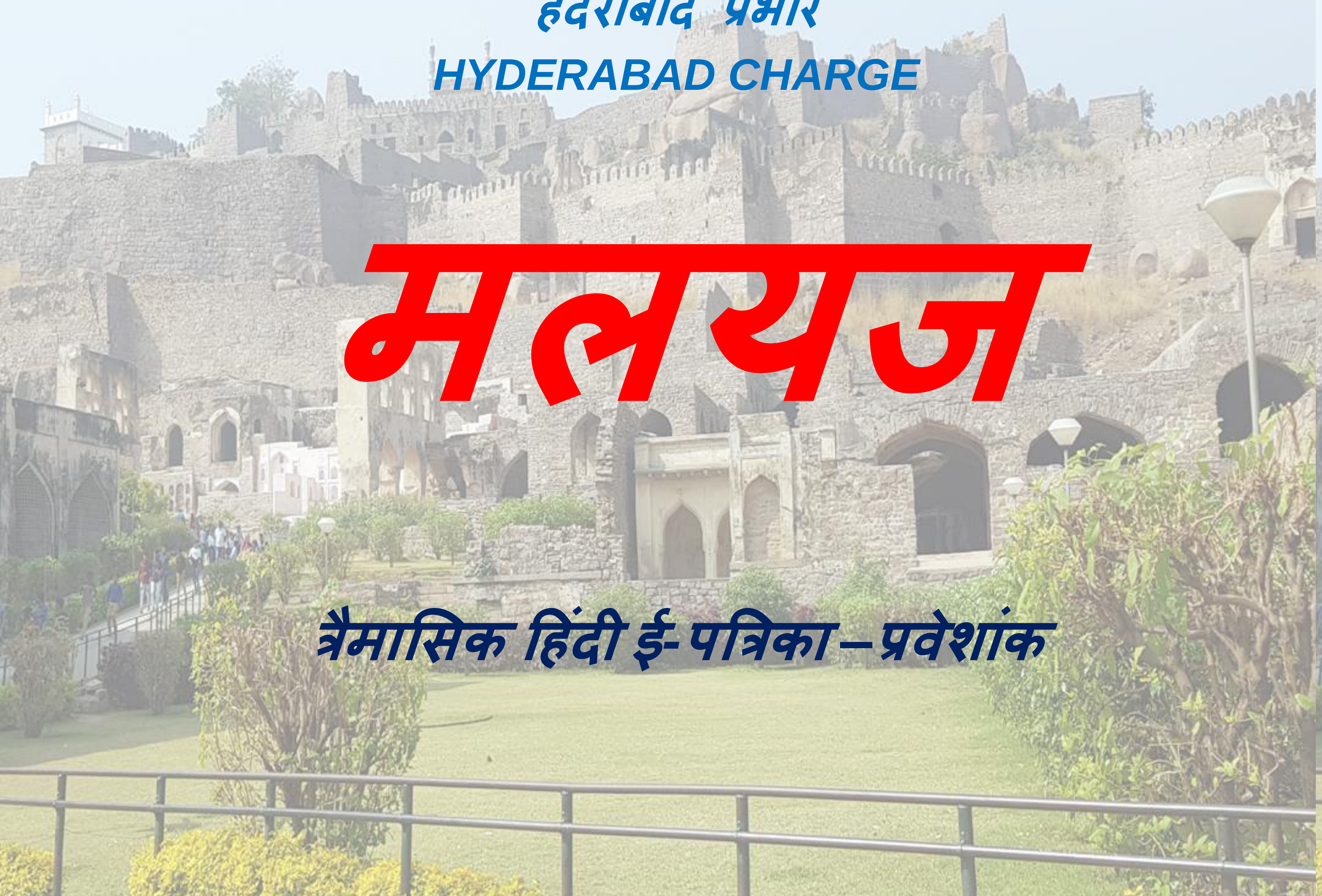

मलयज

त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका – प्रवेशांक

संरक्षक

श्री एन. शंकरन, भा.रा.से.

प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, आन्ध्र प्रदेश एवं तेलंगाना

<u>सह-संरक्षक</u>

डॉ. आर.के. पालीवाल, भा.रा.से.

आयकर महानिदेशक (अन्वे.), हैदराबाद

श्री अतुल प्रणय, भा.रा.से.

मुख्य आयकर आयुक्त, हैदराबाद

प्रधान संपादक

श्री पीयूष सोनकर, भा.रा.से.

आयकर आयुक्त (मुख्या.) व (करदाता सेवाएं)

संपादक मंडल

श्री रवि कुमार,

उप-निदेशक (राजभाषा),हैदराबाद

श्रीमती ममतारानी साहु

उप-निदेशक (राजभाषा), हैदराबाद

श्री सुनील कुमार विभूते

सहायक निदेशक (राजभाषा), हैदराबाद

संपादकीय सहयोग

श्रीमती के. गिरिजा वाणी

वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्री अनिला फणि कुमार

आयकर निरीक्षक

श्री मोहम्मद सुल्तान

हिंदी आशुलिपिक

संपर्क हेतु : e-mail id : <u>hyderabad.ad.ol@incometax.gov.in</u>

अनुक्रमणिका

आन्ध्र प्रदेश व तेलंगाना क्षेत्र, हैदराबाद प्रभार

क्र.सं.	लेख/कविता	रचनाकार /कविकानाम	पृष्ठ सं
1.	क्या तुम ही थे	सुश्री नीना कुमार, सदस्य (प्रशासन) के.प्र.क.बो., नई दिल्ली	4
2.	अमिट क्षण	श्री प्रसन्न कुमार दास, सदस्य (लेखापरीक्षा एवं न्यायिक)के.प्र.क.बो.,नई दिल्ली	5-6
3.	ग़ज़ल	डॉ. आर. के. पालीवाल (राकेश क़मर), आयकर महा-निदेशक(अन्वे), हैदराबाद	7-9
4.	जीवन की वास्तविकता	डॉ. राजेंद्र कुमार, आयकर आयुक्त, हैदराबाद	10
5.	एहसास	श्रीमती शालिनी भार्गव कौशल, आयकर आयुक्त, हैदराबाद	11-12
6.	अंधेरों से आगे	श्री मनीष 'तालिब' पति श्रीमती शालिनी भार्गव कौशल	13
7.	जाना है उस पार	श्री वाल्मिकी शरण ज्योति, आयकर अधिकारी.विशाखापट्टणम	14
8.	मैं हूँ एक चतुर इंसान	श्री राधाकृष्ण, आयकर अधिकारी. गुंटूर	15
9.	होड़	श्री मनीष आनंद, कर वसूली अधिकारी, हैदराबाद	16
10.	समाज	श्रीमती शकुंतला गुप्ता,माता श्री किरण गुप्ता, कार्यालय अधीक्षक, विशाखपट्टणम	17
11.	मानव जीवन और प्लॉस्टिक	श्रीमती के. गिरिजा वाणी, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, हैदराबाद	18-20
12.	उठो द्रौपदी वस्त्र संभालो	श्री कुंजीलाल मीना,आयकर निरीक्षक, हैदराबाद	21
13.	किस्मत के गुलाम मत बनो	श्री अमित कुमार पाल,आशुलिपिक, हैदराबाद	22-23
14.	हिंदुस्तान मेरी जान है	श्री क़मर आलम खान,कर सहायक, हैदराबाद	24
15.	आयकर दिवस महोत्सव-2019	--	25-28

मलयज ई-पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं, संपादक मंडल का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है

नीना कुमार
सदस्य (प्रशासन),
केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड , नई दिल्ली

क्या तुम ही थे

सदा से आकार लेती, आकृति क्या तुम ही थे
जो कभी स्वर ले ना पाई अभिव्यक्ति क्या तुम ही थे

सदा से बनती बिगड़ती, कभी मिटती, कभी छलती
मेरी इस अरचित कविता की पंक्ति क्या तुम ही थे

कस्तूरी को ढूंढती, वन मे विचरती घूमती
जिस विवशता से बंधी वह अनुरक्ति क्या तुम ही थे

परिचित अपरिचित भूलती शून्य में सिमटती डूबती,
इस वैराग्य से वापिस बुलाते आसक्ति क्या तुम ही थे

***

प्रसन्न कुमार दास

सदस्य (लेखापरीक्षा एंव न्यायिक)

केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड, नई दिल्ली

अमिट क्षण

मुझे सुखद अनुभूति देता है
संपूर्ण संयोग का वह क्षण
परम आनंद का वह क्षण
जब मैंने अपना सब कुछ खो दिया था,
मेरा नाम, मेरा शरीर और मेरी आत्मा
सब अचानक पिघल गये थे
कठोर धातु रूपी मेरा अहंकार
पिघलते गर्म धातु की तरह
दिशाहीन प्रवाहित होने लगा था
उन उद्दीप्त विचारों के ईर्द गिर्द
जिन्हें मैं खोज रहा था वर्षों से ।

उस पल मेरा ह्रदय
अनवरत स्पंदित होने लगा उसकी लय में,
और सतत विलीन होने लगा
सदा के लिए एक रस रहने की अभिलाषा में,
जब तक मुद्दतों से घनीभूत कामना
पूर्ण लुप्त न हो जाए शून्यता में
उस अविस्मरणीय कोलाहल की आनंदानुभूति के लिए
समय थम सा गया एक पल के लिए ।

वह अनुपम क्षण
मैं सुरक्षित रखूँगा आनंदानुभूति के साथ
जो कभी क्षीण न हो,
उस अमिट छाप को अक्षुण्ण रखूंगा अतंस में
चाहे झेलना पड़े अपमान समाज से
क्योंकि वह है प्रणय मिलन का चरमबिंदु
सीमित से अनंत के अभिसार का बिंदु
आत्माओं का संगम और जीवन से मोक्षदायी मुक्ति ।

डॉ. आर. के. पालीवाल (राकेश क़मर)
आयकर महानिदेशक (अन्वे.), हैदराबाद

गज़ल

1

बच्चे जो कच्ची उम्र में जड़ से उखड़ गए
उनमें से ज्यादातर खुद में जकड़ गए

फितरत है आदमी की आब की तरह
कभी पिघल गए कभी अकड़ गए

कुछ तो कमी रही है उनकी परवरिश में
ऐसा नहीं कि बच्चे खुद ही बिगड़ गए

जब भी किसी जगह जुल्मत का दौर आया
उस जगह के अच्छे लोग अक्सर उजड़ गए

कुछ लोग ऐसे भी देखें हैं कमर हमने
मरहम की जगह जख्म पर नमक रगड़ गए

2

गांधी – 150

गांधी के साथ मुल्क था, है, और रहेगा
वो एक नया विकल्प था, है, और रहेगा

उसने अवाम को दिए थे अनेक मंत्र
सबका वो कायाकल्प था, है, और रहेगा

दुनिया की आंधियों से वो डगमग नहीं हुआ
उसका गजब संकल्प था, है, और रहेगा

जिस दौर में गांधी रहा वह दौर गजब था
वह खुद में एक कल्प था, है, और रहेगा

7

3

चल रहा हूं कब से फिर भी
कहीं घर नजर नहीं आता

शहर में बन गई इतनी सड़कें
कोई रस्ता नजर नहीं आता

कहने को भीड़ है दुनिया
कोई अपना नजर नहीं आता

हर शाम आता हूं लौटकर वापस
मगर अपने घर नहीं आता

इतना दूर हो गया कुदरत से
पास कोई शजर नहीं आता

शजर – पेड़

4

भूख में खाना सभी को चाहिए
जर जमीं बस आदमी को चाहिए

खुदा का क्या करेंगे मेहनत कश
खुदा तो मौलवी को चाहिये

इल्म की खातिर जरूरी है विभूति
मसखरा तो बतकही को चाहिए

अब कमर तुम ही बताओ इलाज
जिंदगी मरती नदी को चाहिए

जर – सोना

इल्म - ज्ञान

8

5

खुशियों को दर पे सजा कर रक्खा
गमों को सीने में छिपाकर रक्खा

वक्त कितना भी कठिन रहा घर में
खुद को खुशहाल बताकर रक्खा

लोग पीछे से हंसी करते हैं
हमने होठों को खिलाकर रक्खा

छिटककर भटक ही जाते हैं ख्याल
सबको एक साथ मिलाकर रक्खा

अंधेरे हावी न हो पाएं क़मर
दिया एक जलाकर रक्खा

***

9

डॉ. राजेंद्र कुमार

आयकर आयुक्त, हैदराबाद

<u>जीवन की वास्तविकता</u>

ज़िंदगी की सच्चाई
किस से यह छुपी है
जब अंत ही सब कुछ है
तो प्रारब्ध एक स्थिति है

जीवन को सम्भाली अच्छाइयों में
यह कृष्णा की रीति है
खड़े हो जाओ वहां सबके
जहां विपरीत परिस्थिति है

इस जीवन का कुछ पता नहीं
कब है या नहीं है
सब ज़मीन-आसमान को खुशियों से भर दो
क्योंकि अंत एक विसति है

सब कुछ है इस दुनिया में
सिर्फ प्रेम की कमी है
हम क्यों बंट रहे हैं हिस्सों में
जब एक में सभी हैं

हम बंट रहे जात-पात में
सिर्फ धर्म की कमी है
कौन सा मज़हब यह सिखाता है
कि यह नफरत की ज़मीन है

अब भी वक्त है सुधरो
क्योंकि समय की कमी है
कब प्राण जाएंगे छूट
यह दो पल की गली है।

***

10

शालिनी भार्गव कौशल
आयकर आयुक्त,हैदराबाद

<u>एहसास</u>

शहर की इमारतों का जंगल
उसमें छोटा सा घर
जिसके छोटे से कमरे में
थका सा आदमी और उसका
बुझा सा दिल–

दिल के कोने में पड़ा
एक शिथिल सा एहसास
जो न जाने कैसे खुद को आजाद कर गया
और छोटे से रौशनदान से बाहर
परवाज़ कर गया–

वो एहसास जो था
फूलों का, गुलशन का, शबनम का
धूप का, बादे सबा का, आज़ादी का -
और आज वो आज़ाद था
धूप की पत्तियों से
खेलने को बेताब था –

मगर बाहर आते ही
धूल और धुएं से भरे
हवा के झोंके ने
उसे उछाल दिया
और कोने में पड़े कचरे के डिब्बे में
डाल दिया–

वो किसी तरह जान बचा के निकला
और हांफते हुए किसी से
धूप का पता पूछा
पता चला वो दस इमारतों से आगे
एक सूखी हुई नदी के
किनारे पे मिलेगी–

उसने हिम्मत बढ़ाई
और हो लिया उस ओर -
जैसे-तैसे उसने खुद को
नदी के किनारे पे पाया
जो पास के कारखाने से
निकलते मलबे से भरी थी –

वहां कुछ बच्चे, फूल से,
मगर कालिख से पुते हुए,
ढूंढ रहे थे कचरे में
कुछ खाने का सामान-

आखिर एहसास था, तड़प उठा -
उसने सोचा, दिल तंग था
मगर उसमें वो महफूज था -
उसका सांस फूल रहा था
और वो मरने की कगार पर था –

मगर कुछ हिम्मत कर
वह उस तरफ हो लिया
और धूप की किरणों को छोड़
बच्चों की रोटी ढूँढने में खो गया –

अब वो खुश था
जैसे वो सब पा गया हो
फूल, शबनम, चाँद, सूरज
उस बच्चे की रोटी में
समा गया हो–

***

12

मनीष 'तालिब'
पति श्रीमती शालिनी भार्गव कौशल
आयकर आयुक्त,हैदराबाद

<u>अंधेरों से आगे</u>

तू अंधेरों से आगे उजालों की सहर देख
किसी पे संगबारी से पहले अपना घर देख

जिसने सफ़ीने को डुबोया उसे भूल जा
जो साहिल को छू गई वो लहर देख

क़िस्से ख़ुदग़र्ज़ इरादों के न याद कर
जो वतन पर मर मिटे वो जिगर देख

दुनियां की हिक़ारत पे न अफ़सोस कर
जो नर्गिस को परखती है वो नज़र देख

उसके गर्द-आलूदा पैरहन पे न ग़ौर कर
'तालिब' के ख़्याल के उजले सीमो ज़र देख

***

13

वाल्मीकि शरण ज्योति
आयकर अधिकारी,विशाखापत्तनम

जाना है उस पार

***

जाना है उस पारये मत भूल जाना
ये जीवन तेरा उधार, ये मत भूल जाना।

आगये बह के इस किनारे, ये मत भूल जाना
जाना है तुम्हें उस हीं द्वारे, वही तेरा ठिकाना
पल दो पल का है कारोबार, ये मत भूल जाना ।
जाना है उस पार

देखो तेरे सब साथी पल दो पल के सहारे हैं
रहते नहीं सदा साथ तुम्हारे कितने भी ये प्यारे हैं
होजाता घरौंदा उजार ये मत भूल जाना ।
जाना है उस पार

दौलत सोहरत खूब कमालो कुछ न बिगरता तेरा
पर न रहेगा सदा तुम्हारा फिर क्यूँ तेरा मेरा
सबका हो उद्दार ये मत भूल जाना ।
जाना है उस पार

क्यूँ आये हो, क्या है मकसद, जान सका न कोई
खुलता है ये भेद तभी, रुक्सत हो जग से तेरी
तबतक का है इंतजार ये मत भूल जाना।
जाना है उस पर ये मत भूल जाना।

***

14

राधाकृष्ण
आयकर अधिकारी,गुंटूर

मैं हूँ एक चतुर इंसान

मेरी जरूरियात की प्राथमिकता से मैं सामाजिक संबंध बना लेता हूँ।
किस कार्य के लिए किसकी आवश्यकता होगी,
यह मैं भली तरह से अनुमान लगा लेता हूँ।

अपना तो सिद्धांत ही है - ''गंगा गए गंगाराम, यमुना गए यमुनादास।''

अपनी जरूरत के अनुसार अपने वार्तालाप का अंदात
बदलने का हुनर मुझमें जन्म जात है।
जिस व्यक्ति से काम निकालना हो उससे मधुर वार्तालाप
और उसके खंडन में मुझे विशेष योग्यता प्राप्त है।

काम समाप्त होते ही ''आप कौन'' अपना ब्रह्म वाक्य है।
यह मेरी एक अद्वितीय कला है।
मैं अपनी मंजिल हासिल करने के लिए लोगों के दिलों को तोड़ता हूँ
अपनी कड़वी बातों से दिलों को घायल करता हूँ।

लोगों के इस तरह तोड़े हुए दिलों के टुकड़ों को सोपान बनाकर,
मुस्कुराते हुए पहुंचता हूँ मैं अपनी मंजिलकी चट्टान पर ।
मेरा न कोई अपना है, न कोई पराया।
मेरा तो मतलब होता है केवल अपनी जरूरतों के अनुसार ।

मैं गधे को भी मान लेता हूँ अपना बाप जरूरत पड़ने पर ।
परंतु जरूरत पूरा होते ही मेरी याददाश्त हो जाती है कमजोर ।
न तो मुझे मददगार याद रहता है याद ,
न ही उसके द्वारा की गई मदद
इसीलिए मैं एक चतुर इंसान हूँ।

मनीष आनंद
कर वसूली अधिकारी,हैदराबाद

होड़

पैसे कमाने की **होड़** में मर्यादाएं टूट रही हैं, सभ्य और समृद्ध समाज के सपने टूट रहे हैं।
छोटी सी जिंदगी में सब कुछ पाने की चाह हैं, पर जिनके लिए पाना है वो अपने छूट रहे हैं।

भविष्य को सँवारने की चाह में वर्तमान भी जा रहा है,
पर भविष्य की क्या सीमा है, कोई भी नहीं बता पा रहा है।

खुलती है आंखें जब जिंदगी की अंतिम दौड़ में,
अपने साथ नहीं रहते वो भी रहते हैं धन दौलत पाने की **होड़** में।

फल की चाह है पर पौधे तो बोये नहीं,
एक अच्छा इंसान बनने की **होड़** में कोई नहीं।

सबको पैसे चाहिए, सबको अच्छी जिंदगी की चाह है,
पर जिसको हमारी फिक्र है, उसकी किसको परवाह है।

जिन्होंने हमें जन्म दिया, पाला-पोसा, उनके प्रति अपनी जिम्मेवारियों को भूल हम उनसे अपनी नजरे चुराए बैठे है।
पर हमारे बच्चे हमारे बुढ़ापे का सहारा जरूर बनेंगे किस बुनियाद पे हम उनसे ये उम्मीद लगाए बैठे है।

अच्छी और महँगी तालीम देनी है बच्चो को, पर अच्छे संस्कारो की कमी दिखाई नहीं देती,
बच्चो से बेहतर परिणाम पाने की **होड़** में, अपनी ही गलती दिखाई नहीं देती।

हम इस भ्रम में है की अगली पीढ़ी का भविष्य हम ही बनाएंगे,
उनकी काबिलियत पर शक मत करो, वो हमसे बेहतर मुकाम पाएंगे।

जो साथ खड़े हैं वही हमारा परिवार है, समाज है,
उनके लिए जियो, उनको ही तुम पर नाज़ है।

लो एक विराम इस भाग दौड़ से, और सोचो क्या पा लिया तुमने,
सब कुछ पाने की **होड़** में कहीं अपनों को तो नहीं खो दिया तुमने।

जन्दगी इसी पल में है, इसको जियो, खुश रहो और दुसरो की जिंदगी आबाद करो,
भविष्य की गर्त में क्या छिपा है इस चक्कर में वर्तमान को मत बर्बाद करो।

***

16

शकुंतला गुप्ता
माताश्रीकिरण गुप्ता, कार्या. अधीक्षक

समाज

नारी जीवन झूले की तरह
इस पर कभी उस पर कभी
अंखियों में असुवन कभी
होठों पर मुस्कान कभी
फिर भी करती रहे संघर्ष सदा
पीछे न देख, आगे बढ़े सदा।
घर उसका मंदिर, तो पति देवता
अनजानों को बनाती अपना सदा ।
थोड़ी सी गर चूक हो जाए
दोषी बन, कटघरा मिल जाए उसे।
दूसरों के लिए बलिदान भी दे दे
बस सबका थोड़ा स्नेह पाने के लिए।
सुख-सुविधा सबको दे अपनी जान पर खेले
पर उसकी बारी आए तो सब दूर हो जाएं।
ये आज का नहीं, युगों से चला है
यहां सीता, द्रोपदी को तो छोड़ा नहीं
मंदोदरी की विनती-आंसू को देखा नहीं
अहल्या बनी पत्थर, दया नहीं किसी को
उर्मिला नींद ले पड़ी रही बचाने पति को
मांडवी को नहीं पूछा कोई क्यों उदास है।
मोहरा बना डाला कैकयी को सारी दोष उसी का है
वही समाज आज भी है, कैसे देख सकता है
नारी का सम्मान आज भी है, कैसे कर सकता है।
इतनी तंग समाज राह पर बाधाएं बनी
फिर भी नारी ने बन दिखायी झाँसी की नारी।।

17

के. गिरिजा वाणी

वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, हैदराबाद

मानव जीवन और प्लास्टिक

<u>प्रस्तावना –</u>

आज के युग में प्लास्टिक का उपयोग मानव जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुका है। हम सभी जानते है कि प्लास्टिक एक हानिकारक चीज है । प्लास्टिक हमारे जीवन के साथ साथ पृथ्वी व पर्यावरण के लिए भी खतरा पैदा कर रहा है । यह सत्य है कि छोटे बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक प्लास्टिक उपयोग करने में होने वाले नुकसान से वाकिफ हैं । लेकिन सुबह टूथब्रश से लेकर रात को सोने तक ध्यान से देखा जाए तो हम पाएंगे कि प्लास्टिक किसी न किसी रूप में अपने जीवन पर कब्जा कर रखा हैं ।यदि देखा जाए तो बाजार से कोई सामान लाना, टिफिन बाक्स,वॉटर बॉटल, खेल के सामान, सीडी और डीवीडी, जैसे कई वस्तुओं को लाने व ले जाने हेतु प्लास्टिक का इस्तेमाल हर जगह पर हर समय है ।

मानव द्‌वारा प्लास्टिक का उपयोग अपनी सुविधा के लिए प्रयोग में लाया गया है । एक प्लास्टिकका बैग अपने वजन से 2000 गुना ज्यादा वजन उठा सकता है और इसके कहीं पर भी आसानी से ले जा सकते है । मनुष्य ने जिस प्रकार उन्नति की ओर अग्रसर कररहा है उतना ही आलसी होता जा रहा है । वह कहीं पर भी वस्तुओं को खरीदने जाता है तो वह घर से कपडे या जूट से बनी थैली लेकर नहीं जाता है, जिसके कारण दूकानदार या व्यापारी मजबूरी में पॉलिथीन बेगों में समान देते है। फलस्वरूप, प्लास्टिक का उपयोग बहुत मात्रा में बढ गया है ।

<u>प्लास्टिक क्या है -</u>

देखा जाए तो प्लास्टिक एक सामान्य शब्द है जो किसी भी वस्तु के लिए उपयोग किया जाता है । जो सिंथेटिक या सेमी- सिंथेटिक जैसे पॉलीथीन, पीवीसी, नायलॉन आदि की किसी भी सामग्री के लिए उपयोग किया जाता है। इसमें ठोस वस्तुओं को ढालने या आकार देने की क्षमता होती है। सामान्य तौर पर, प्लास्टिक हल्का और मजबूत होता है। यह जल प्रतिरोधी है और सस्ते में बनाया जा सकता है।

अब हम प्लास्टिक से जुड़े कुछ तथ्यों पर नजर डालेंगे । हमजो कूड़ा-कचरा फैंकते हैं उसमें प्लास्टिक का एक बड़ा हिस्सा होता है ।

18

मानव द्वारा प्लास्टिक का उपयोग –

प्लास्टिक अन्य पदार्थों की तरह विघटित नहीं होता है. यह एक ऐसा पदार्थ है जो कि हजारों सालों तक ज्यों का त्यों पड़ा रहता है । प्लास्टिक को पूरी तरह से खत्म होने में 500 से 1,000 साल तक लगते हैं । प्लास्टिक को बनाने के लिए कई जहरीले केमिकल का प्रयोग किया जाता है और आजकल तो फास्ट फूड का जमाना है तो लोग स्ट्रीट फूड खाना पसंद कर रहे हैं और यह खाना भी उन्हेंप्लास्टिक की थैलियों में ही दिया जाता है। प्लास्टिक बैग बनाने में जायलेन, इथिलेन ऑक्साइड और बेंजेन जैसे केमिकल्स का इस्तेमाल किया जाता है जिसे उपयोग करने पर स्वास्थ्य पर उसका प्रतिकूल प्रभाव पडता है और पर्यावरण के लिए बहुत हानि कारक होती है।

प्लास्टिक नॉन-बॉयोडिग्रेडेबल होता है। नॉन-बॉयोडिग्रेडेबल ऐसे पदार्थ होते हैं जो सामग्रियों को प्राकृतिक तत्वों द्वारा मिट्टी में विघटित नहीं हो सकता है, यहसामग्री पूरी तरह से पृथ्वी में कभी ढल नहीं जाती है, बस छोटे टुकड़ों में टूट जाती है ।हर साल 300 से अधिक प्लास्टिक

के टन का उत्पादन किया जा रहा है। जिनमें से 50% केवल कुछ क्षणों के लिए उपयोग किए गए एकल उद्देश्यों के लिए है, प्लास्टिक से बनी हुई ऐसी वस्तुओं के इस्तेमाल से बचें जिन्हें एक बार उपयोग करने के बाद फेंका जाता है ।

इससे हानियाँ –

प्लास्टिक हजारों सालों तक ज्यों का त्यों पड़ा रहने के कारण जब उसे भूमि के अंदर दबा दिया जाता है तो यह विघटित नहीं हो पाता है और इससे जहरीली गैसें पैदा होती हैं, जिससे पर्यावरण प्रदूषित होने लगती है ।

इसको जलाया जाता है तो सारे केमिकल हवा में फैल जाते हैं और वायु प्रदूषण का कारण बन जाता है ।

प्लास्टिक के हजारों सालों तक खराब नहीं होने के कारण यह महासागरों में पडा रहता है और धीरे धीरे इससेजहरीले पदार्थ निकलते रहते हैं जो कि जल में घुल जाते हैं और उसे प्रदूषित कर देते हैं । 90% से अधिक समुद्री पक्षियों के पेट में प्लास्टिक के टुकड़े पाए जाते हैं। समुद्री जीवों को सागरों में प्लास्टिक के कूड़े में फंसे हुए पाए गए हैं । बताया गया है कि हमारे महासागरों में हर साल 8 मिलियन टन से अधिक प्लास्टिक डाला है।

इससे बचाव -

प्लास्टिक के बैग्स को संभाल कर रखें। इन्हें कई बार इस्तेमाल में लाएं। सामान खरीदने जाने पर अपने साथ कपड़े या कागज के बने बेग लेकर जाएं।

प्लास्टिक की पॉलीइथाइलीन टेरेफ्थेलेट (PETE - Polyethylene Terephthalate)और उच्च घनत्व पॉलीथीन (HDPEHigh-Density Polyethylene)प्रकार के सामान चुनिए। यह प्लास्टिक आसानी से रिसाइकल हो जाता है। अपने कचरे को वहां तक पहुंचाने की व्यवस्था करें जहाँ आसानी से रिसाइकल हो
जाता है । खाने की वस्तुओं के लिए स्टील या फिर मिट मिट्टी के पारंपरिक तरीके से बने बर्तनों के उपयोग को बढ़ावा दें ।

प्लास्टिक सामान को कम करने की कोशिश करें । धीरे-धीरे प्लास्टिक से बने सामान की जगह दूसरे पदार्थ से बने सामान को अपनाएं ।

अपने आसपास प्लास्टिक के उपयोग कम करने और प्लास्टिक से होने वाले नुकसान को लेकर चर्चा करें। बच्चों को प्लास्टिक प्रयोग से होने वाले खतरे के बारे में बचपन से ही बताते रहिए जिससे कि वह बचपन से ही कम से कम प्लास्टिक का उपयोग करने लगेंगे ।खुद प्लास्टिक को खत्म करने की कोशिश न करें। न पानी में, न जमीन पर और न ही जमीन के नीचे प्लास्टिक खत्म होता है। इसे जलाना भी पर्यावरण के लिए अत्यधिक हानिकारक है।

<u>उपसंहार -</u>

प्लास्टिक हटाने से नई पीढी के लिए स्वच्छ और सौभाग्यशाली कल दे सकते हैं और कई बीमारियों से दूर रह सकते हैं। पर्यावरण को स्वच्छ बनाने प्लास्टिक इस्तेमाल पर रोक लगाना होगा अन्यथापृथ्वी पर सांस तक लेना मुश्किल हो जाएगा ।सरकार और पर्यावरण संस्थाओं के अलावा भी हर एक नागरिक की पर्यावरण के प्रति कुछ खास जिम्मेदारियां हैं इन्हें अगर समझ लिया जाए तो पर्यावरण को होने वाली हानि को बहुत हद तक कम किया जा सकता है।स्वयं पर नियंत्रण इस समस्या को काफी हद तक कम कर सकता है ।

****

20

कुंजी लाल मीना
आयकर निरीक्षक, हैदराबाद

उठो द्रोपदी वस्त्र सम्भालो, अब गोविंद न आएंगे

उठो द्रोपदी वस्त्र सम्भालो,
अब गोविदं न आएंगे।

छोड़ो मेंहदी भुजा सम्भालो,
खुद ही अपना चीर बचा लो।

धुत बिछाए बैठे शकुनि,
मस्तक सब बिक जाएंगे।

उठो द्रोपदी वस्त्र सम्भालो,
अब गोविदं न आएंगे।

कब तक आस लगाओगी तुम,
बिके हुए अखबारों से।

कैसी रक्षा मांग रही हो,
दु:शासन दरबारों से।

स्वयं जो लज्जाहीन पड़े हैं,
वे क्या लाज बचाएंगे।

उठो द्रोपदी वस्त्र सम्भालो,
अब गोविदं न आएंगे।

कल तक केवल अंधा राजा,
अब गूंगा-बहरा भी है।

होठ सिल दिए हैं जनता के,
कानों पर पहरा भी है।

तुम्ही कहो ये अश्रु तुम्हारे,
किसको क्या समझाएंगे?

उठो द्रोपदी वस्त्र सम्भालो,
अब गोविदं न आएंगे।

***

21

अमित कुमार पाल,
आशुलिपिक, हैदराबाद

किस्मत के गुलाम मत बनो

बहुत सारे लोग अपनी ज़िंदगी में बहुत कुछ पाना चाहते हैं, बहुत सारे लोग बेताब हैं खुद को साबित करने के लिए बहुत सारे लोग अंदर से तड़प रहे हैं - वो तड़प रहे हैं खुले आसमान में एक आज़ाद परिंदे की तरह उड़ने के लिए।

बहुत सारे लोग बहुत कुछ करना चाहते हैं पर वो क़ैद हैं, वो क़ैद हैं उन अनदेखी दीवारों के पीछे जहां वो निकल नहीं पा रहे **"रिश्तों की दीवारें, समाज की दीवारें, गरीबी की दीवारें, असफल हो जाने का डर, कुछ न कर पाने का डर"** और न जाने कितनी दीवारें जिन्होंने इन लोगों को आगे आने से रोक रखा है। लेकिन सच क्या है? क्या सच में ये दीवारें इतनी शक्तिशाली हैं कि आप बस इन्हीं के कारण रुके हुए हैं।

हाथी के बच्चे की कहानी सुनी होगी ना - कैसे उसके मालिक ने उसके पिछले पैरों को एक रस्सी से हमेशा बांध कर रखा, असल में उस वक्त उसके मालिक ने उसके पिछले पैर को नहीं बांधा था उसने हाथी के मन को बांधा था - एक बार उसने हाथी के मन को बांध दिया फिर हाथी हमेशा के लिए उसका गुलाम हो गया।

हाथी के मन में उसके चारों तरफ यही अनदेखी दीवारें खड़ी कर दीं जो आज आपके मन ने आपके चारों तरफ खड़ी कर रखी हैं। अपने अंदर झांक कर देखो - आप इस मन के गुलाम बन चुके हो - जो दीवारें आपको दिखाई दे रही हैं, इनका कोई अस्तित्व नहीं है, ये सब आपके मन का किया हुआ है। खुद को पहचानो, अपनी ताकत को समझो। आप एक आज़ाद और ताक़तवर इंसान हो, एक गुलाम की तरह जीवन न जियो। इन झूठी दीवारों को उस पार देखने की कोशिश करो।

मुझे पता है कि आप भी सपने देखते हो, आप भी अंदर से तड़प रहे हो, आप परेशान हो खुद को साबित करने के लिए आपके दिमाग में बहुत सारे अच्छे विचार हैं और आप जानते हो कि इनमें से कोई एक विचार भी अगर काम कर गया तो आपकी ज़िंदगी बदल जाएगी, लेकिन आप इन्हें अपनी ज़िंदगी में लागू नहीं कर पा रहे हो।

22

कारण:- ये अनदेखी मन की दीवारें, जिन्होंने आपको क़ैद कर रखा है।

किसके घर में पैदा होना है या कैसे माहौल में पैदा होना है यह इंसान तय नही कर सकता है, लेकिन उस इंसान को अपनी ज़िंदगी कैसे जीनी है, वह अपने लिए किस तरह का जीवन चाहता है, ये सब उसे ही तय करना होता है। इसलिए सोचो इसके बारे में - क्यों रुके हो, किसके लिए रुके हो, आज तोड़ दो इन दीवारों को, हो जाओ आज़ाद हर उस दीवार से जो आपको और आपके मन को बांधे हुए है। आज़ाद वक्त है, सांसे हैं तो तय कर लो कि कैसी ज़िंदगी जीना चाहते हो

जय हिंद - जय भारत

23

क़मर आलम ख़ान
कर सहायक, हैदराबाद

हिन्दुस्तान मेरी जान है

ये जिस्म भी ये जान भी
तेरे लिए कुरबान भी
अस्तित्व है तुझसे मेरा, तुझसे मेरी पहचान भी
तू हिन्दुस्तान है, तू मेरी जान है।

मैं नस-नस में तेरा, बस तेरा, इश्क़ यूं भर लूँ
मैं तेरे लिए जियूं-मरूं, सांस भी तेरे लिए बस लूँ
प्यार मेरा तू
तेरी वफा, सेवा तेरी मेरे लिए ईमान है
तू हिन्दुस्तान है, तू मेरी जान है ।

समेटे हर धर्म को , ज़ात को अपने अंदर तू
कई सारी सभ्यता-संस्कृति का समंदर तू
हर नज़र में तू
सबसे अलग सबसे जुदा, जग में तेरी पहचान है
तू हिन्दुस्तान है, तू मेरी जान है ।

बुलंदी की तरफ तू बढ़े, हर घड़ी हर पल
रहे तेरे नाम से विश्व हर तरफ हलचल,
ऐसा हो तेरा कल
खुशहालियां तुझमें बसें, हर दिल में ये अरमान है
तू हिन्दुस्तान है, तू मेरी जान है ।

****

24

आयकर दिवस महोत्सव - 2019

आयकर विभाग, आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना क्षेत्र, हैदराबाद द्वारा 24 जुलाई, 2019 को 4.00 बजे जे.आर.सी कन्वेशन सेंटर,जुबली हिल्स, हैदराबाद में आयकर दिवस समारोह पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया ।

नालसर विश्वविद्यालय, हैदराबाद के कुलपति प्रो. डॉ. फैजल मुस्तफा इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर विभाग ने कॉलेजों, स्कूलों के छात्रों और आयकर विभाग के कर्मचारियों के बीच विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए तथा अधिकारियों और कर्मचारियों को विभिन्न पुरस्कार जैसे सर्वश्रेष्ठ (1) अन्वेषक (2) सर्वोच्च कर संग्रहकर्ता (3) शीर्ष कॉर्पोरेट करदाता (4) शीर्ष फर्म करदाता (5) शीर्ष व्यष्टि करदाता (6) व्यष्टि महिला करदाता (7) वरिष्ठ करदाताओं तथा आयकर विभाग आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना आदि के सर्वश्रेष्ठ कार्य निष्पादकों को आदर सत्कार के साथ पुरस्कृत किया गया ।

वर्तमान में कार्यरत हमारे आईआरएस अधिकारी श्री सिम्हाचलम कट्टा को भारतीय प्रशासनिक सेवा में शामिल होने के कारण उन्हें विशेष रूप से पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया ।

श्री मल्लेश, आशुलिपिक, जो जकार्ता में आयोजित एशियाई खेलों 2018 में भारतीय कबड्डी टीम का प्रतिनिधित्व कर भारत को कांस्य पदक दिलाने में सफल रहने के कारण उन्हें इस अवसर पर पुरस्कृत किया गया ।

आयकर कार्यों का निष्पादन बेहतर ढंग से करने वाले अधिकारियों को तथा कर्मचारियों को माननीय प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, माननीय आयकर महा निदेशक (अन्वे), माननीय मुख्य आयकर आयुक्त, हैदराबाद के कर कमलों द्वारा पुरस्कार प्रदान किया गया ।

संस्कृतिक कार्यक्रम के रूप में, महात्मा गांधी और कस्तूरबा गांधी के 150 वें जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में ***पद्मश्री श्री मोहम्मद अली बेग द्वारा निर्देशित*** तथा ***श्री आर.के. पालीवाल, आयकर महा निदेशक(अन्वे), हैदराबाद*** द्वारा रचित ‘ ***कस्तूरबा*** ’ नाटक का शानदार मंचन किया गया। श्री पीयूष सोनकर, आयकर आयुक्त (प्रशा.) व (करदाता सेवाएं) की पत्नी श्रीमती स्नेहलता सोनकर जी ने अपना गीत प्रस्तुत किया ।

इसके अतिरिक्त श्रीमती एम. रमणी, पत्नी श्री रवींद्र साई, आई.आर.एस द्वारा एक नृत्य भी प्रदर्शित किया गया । ***‘अपने करों का भुगतान करें और गर्व से सर ऊँचा रखे ’*** इस आदर्शोक्ति के आधार पर राष्ट्र को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए श्रीमती राजेश्वरी साईनाथ द्वारा शास्त्रीय नृत्य की प्रस्तुति की गई और आर्मी बैंड के साथ सभा समाप्त की गई ।

25

इस भव्य आयोजन में आयकर परिवार हैदराबाद के सदस्यों और उनके परिजनों, विभाग के सेवानिवृत अधिकारियों एंव कर्मचारियों, केंद्र एंव प्रदेश सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों एंव गणमान्य करदाताओं की काफी संख्या में उपस्थिति रही।

मंचासीन बाएं से दाएं श्री पीयूष सोनकर,आयकर आयुक्त (प्रशासन) (टी. पी. एस.), श्री एन. शंकरन,प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, मुख्य अतिथिप्रो. डॉ. फैजल मुस्तफा कुलपति नालसर विश्वविद्यालय, हैदराबाद,डॉ आर के पालीवाल,आयकर महानिदेशक (अन्वे)एंवश्री अतुल प्रणय, मुख्य आयकर आयुक्त, हैदराबाद की एक झलक

मुख्य अतिथि से उत्तम सेवाओं के लिए पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्रीमती के. कामाक्षी,

प्रधान आयकर आयुक्त (सेंट्रल), हैदराबाद

26

बाएं से तीसरे अधिकारी श्री सिम्हाचलम कट्टा, भारतीय राजस्व सेवा ने भारतीय प्रशासनिक सेवा में शामिल होने के कारण उन्हें विशेष रूप से पुरस्कृत किया गया

उत्तम करदाता एवं सौ वर्षों से अधिक उम्रवाली महिला करदाता श्रीमती मोहिनी देवी मंत्री को सम्मानित करते हुए माननीय प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त

27

डॉ आर के पालीवाल, भा. रा. सेवा आयकर महानिदेशक (अन्वे), हैदराबाद द्वारा लिखित कस्तूरबा नाटक के आरिफ बेग फाउन्डेशन हैदराबाद द्वारा मंचन की एक झलक

मधुर गीत प्रस्तुत करते हुए श्रीमती स्नेहलता सोनकर व शास्त्रीय नृत्य प्रदर्शित करते हुए श्रीमती एम. रमणी

सांस्कृतिक कार्यक्रम की एक झलक व मधुर संगीत प्रस्तुत करते हुए आर्मी बैंड की एक झलक

28

आयकर विभाग

INCOME TAX DEPARTMENT

आन्ध्र प्रदेश व तेलंगाना क्षेत्र

ANDHRA PRADESH & TELANGANA REGION

हैदराबाद प्रभार

HYDERABAD CHARGE